Vol 3 Issue 4 Oct 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-4, Oct-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

प्रभा खेतान की नायिकाएँ

पूनम कुमारी सहरावत , Sangita
तदर्थ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, भगिनी निवेदिता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, कैर, नई दिल्ली
M.A. (Hindi)JRF, Research Scholar, Dept. of Hindi,M.D.U. Rohtak

सारांश :भूमिकाः
प्रभा खेतान की नायिकाओं की रचना 1990 के दशक में होती है। इस समय विश्वस्तर पर स्त्रीवाद की दूसरी लहर प्रभाव में आ चुकी थी। इस लहर का प्रभाव हमें न सिर्फ पश्चिम में एक के बाद एक स्त्रीवाद पर सामने आ रही सैद्धांतिक कृतियों में दिखता है, बल्कि साहित्य पर भी दिखता है। प्रभा खेतान 'सेकेण्ड सेक्स' के अनुवाद 'स्त्री उपेक्षिता' द्वारा हिन्दी पाठकों के लिए पहले पहले स्त्रीवाद की सैद्धांतिक खाद उपलब्ध कराती है। इसकी स्त्रीवादी चेतना का प्रभाव उनकी नायिकाओं पर भी दिखता है। इन नायिकाओं में हमें जीवन के अनुभवों और उनसे बनाए सिद्धान्तों की झलक दिखती है। यद्यपि ये नायिकाएँ बनावटी न होकर अनुभवों द्वारा जीवन का स्वविश्लेषण हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

प्रस्तवाना :

स्त्रीवाद व स्त्रीवादी चेतना का प्रभाव

प्रभा खेतान जिस समय अपनी देशी–विदेशी नायिकाओं को आकार दे रही हैं, वह विश्व स्तर पर स्त्रीवाद के लिए महत्वपूर्ण समय था। 1970 के दशक से ही केट मिलेट, इलेन शॉल्टर, जुडिथ, टॉरिलमोई आदि स्त्रीवादियों ने स्त्री–लेखन पर नए ढंग से ध्यान खींचा। इन सभी स्त्री विचारकों ने 'साहित्य को सर्जन, अभिव्यक्ति और स्त्री को उत्पीड़ित करने वाली राजनीति का महत्वपूर्ण केन्द्र'1 घोषित किया। इस तरह स्त्री साहित्य, स्त्री–मुक्ति के सन्दर्भ में विश्लेषण पद्धति का महत्वपूर्ण अंग बना। 1970 का दशक जैसे–जैसे बढ़ता गया स्त्री विचारकों के ध्यान का केन्द्र स्त्री–द्वारा, स्त्री के लिए, स्त्री का साहित्यिक प्रतिनिधित्व जैसे प्रश्न बनने लगे।

इलेन शॉल्टर लिखती हैं– 'अगर हम ऐसे ही स्त्री के रूढ़िवादी रूप, पुरुष आलोचकों का लिंगवाद और साहित्य के इतिहास में स्त्रियों द्वारा निभाई गई ;संकीर्णद्ध भूमिकाएँ ही पढ़ते रहे तो हम ये कभी नहीं सीख पाएंगे की स्त्री वास्तव में क्या करती है और क्या अनुभव करती है, बल्कि ये जानेंगे की पुरुष के अनुसार स्त्री को क्या–क्या करना चाहिए।'

प्रभा खेतान की नायिकाएँ इलेन शॉल्टर की ऐसी सैद्धांतिक समझ का जीवंत रूप हमें प्रस्तुत करती हैं। ये नायिकाएँ न सिर्फ कथा का केन्द्र हैं, बल्कि पूरी कृति का परिप्रेक्ष्य ही हैं। 'अग्निसभवा' उपन्यास की नायिका आइवी कहती हैं– यदि औरत अपने को नीचे न गिरायें तो दुनिया में किसी की हिम्मत नहीं कि उसके कन्धें पर हाथ रख दें।'[4] यह कथन आइवी केवल कहती नहीं है, बल्कि अपने पति द्वारा प्रताड़ित होकर भी, बेटे को खोकर भी, विदेशी पृष्ठभूमि पर एक टैक्सी ड्राइवर के रूप में संघर्ष करती हुई चरितार्थ करती हैं। आइवी इस कथा में केवल एक स्त्री नहीं है, बल्कि एक सामाजिक, एक व्यक्तित्व भी हैं। प्रभा खेतान की यह नायिका सही मायने में स्त्रौण से स्त्रीवादी, स्त्रीवादी, स्त्रीवादी से स्त्री बनने के चक्र पूरे कर चुकी है, वह मात्रा कथा पात्रा नहीं है, बल्कि स्त्रौण से भिन्न तरह के स्त्री के सामाजिकरण को दिखाती हैं। जिसमें केवल घर नहीं, राजनीति है, श्रमिक वर्ग है, उनके बीच में आइवी है। आईवी कहती है– सत्ता तो एक फूला हुआ गुब्बारा है जिसमें जनता के फेफड़ों की हवा भरी होती है। इस गुब्बारे में सुई चुभों दो। बस हवा निकल जाएगी।[5]

आइवो की अपने आस–पास के वातावरण पर यह तीखी टिप्पणी कोई साहित्यिक 'युटोपिया' नहीं है, बल्कि आइवी का यथार्थ है, जो स्त्री के परम्परागत साहित्यिक युटोपिया और स्त्री के उदासीन रूप को तोड़ता है। इसीलिए अपने परिवार के सभी पुरुषों के गुजर जाने पर भी वह कहती है– फ्प्राफा जो चला गया उसके लिए मैं नहीं सोचना चाहती। जो सामने हैं उसमें जीना चाहती हूँ।[6]

घरेलू और सामाजिक संस्थाओं से उसका मोह भंग हो चुका है–'ये साले चीनी पति होते ही हरामी हैं, एक मेरा पति था...दिन–रात लाल किताबें लिए विश्वक्रान्ति की बाते करता रहता...कम्युनिस्ट किचन में पेटभर ही जाता था। और आये दिन शराब के नशे में मुझे पीटता था..'[7]

वह एक समाज के एकसाधरण तबके से होकर, बिना किसी विशेष शिक्षा–दीक्षा के भी स्त्री देह–व्यापार और पूँजीवादी समाज के सम्बन्ध को समझती हैं। किन्तु वह कोई 'सॉफिस्टिकेटेड' चरित्रा नहीं, बल्कि जीवन के उतार–चढ़ाव के अनुरूप है। इसलिए अपने संघर्षों में कई बार 'रिजिड' हो जाती है, गालियाँ देती हैं। आईवी का यह रूप, स्त्री का यथार्थ रूप है जिसमें स्त्री की क्षमताएँ पता चलती हैं।

ऐसे पात्रों को साहित्यिक पाठ के रूप में रचने का उद्देश्य केवल स्त्री को नायिका बनाना नहीं होता बल्कि पाठकीय संवेदन में स्त्री की नई–नई भूमिकाओं व छवियों को विस्तार देना है। उन्हें सहज रूप से ग्रहण करने वाले बोध का निर्माण करना है।

वास्तव में ये नायिकाएँ यथार्थ चरित्रा है, ऐसे स्त्री चरित्रा है जो प्रायः एक औसत मानसिकता के अनुसार समाज मे असहज माने जाते हैं। किन्तु वास्तव में यह असहजता पात्राों की नहीं है, बल्कि समाज में प्रचलित स्त्री–आदर्श और स्त्री–यथार्थ के बीच की असहजता है। मसलन अपने–अपने चेहरे की रमा जिसे समाज ने मिस्टर गोयनका की दूसरी औरत का नाम दिया और बाद में व्यापारिक साझीदार। समाज उसकी आलोचना करता है फ....कितना भी बिजनेस कर ले। पढ़ाई कर ले लेकिन एक चुटकी सिंदूर का आत्मबल ही अलग होता है।[8]

रमा प्रेम को चुनती है, मिस्टर गोयनका से वह 'प्लेटोनिक' प्रेम करती है। जर्मेन ग्रीर फीमेल युनख में लिखती हैं– 'प्लेटोनिक प्रेम का आदर्श सर्जनात्मक सद्भाव की शक्ति को केन्द्रित करना है।'[9] किन्तु 'वास्तव में स्त्री–पुरुष का प्रेम करने का ढंग अलग–अलग है।'[10] 'स्त्रियाँ प्रेम के लिए हमारे समाज द्वारा पहले से तय भूमिकाओं को नकार देती है, असुरक्षित, हीन, अयोग्य बनकर वह उदार ढंग से प्रेम नहीं कर सकती।'[11] रमा का प्रेम ऐसा ही है। रमा अपने प्रेम ;शादी–शुदा व्यक्ति सेद्ध के लिए समाज में प्रचलित मुख्य सम्बन्ध (विवाह) को नकार देती है। वह एक स्त्री है, जिसकी पहचान किसी की पत्नी होने की नहीं, बल्कि व्यवसाय में सफल स्त्री की है।

प्रेम की परम्परागत समझ के अनुरूप उसने प्रेम को असुरक्षा में, देखी–देखी में या मजबूरी में नहीं चुना, बल्कि बराबरी के स्तर पर चुना है। यह न सिर्फ 'एनलार्ज इगोटिज्म' (Enlarge Egotism) से मुक्त है बल्कि सिम्बोइटिक अटैचमेंट से भी मुक्त है।

रमा ने विवाह के बदले प्रेम को चुना है, वह अपने इस चुनाव के जरिए जीवन को सार्थकता और सफलता का नया परिप्रेक्ष्य देने का प्रयास करती है। रमा कहती है– यथास्थितिवाद के पोषक कितने सुखी हैं। कहीं कोई खतरा नहीं। खतरा तो मैं जो बोलती हूं, उसमें है।.... छिः यह कैसा समाज है?औरत बस खटाल से बंधी गाय की तरह डकारती है।[12]

रमा की सोच स्त्री की परम्परागत भूमिकाओं की जड़ता से टकराती है। वह न माँ है, न पत्नी, न सध्वा, न विध्वा किन्तु फिर भी वह अपने सम्बन्धें की जिम्मेदारियाँ उठाती है। रमा विवाह संस्था से बाहर रहकर समाज में दूसरी औरत कहे जाने पर भी मानव के मूल्य को नहीं भूलती, नहीं नकारती। वह कहती है– फ्मेरी जिंदगी मेरी तरह, उसकी उसके जैसी अलग–अलग दायित्व, अलग–अलग चाहना।,[13] स्त्री के जीवन में कहां बदलाव चाहिए, इसके प्रति रमा बिल्कुल सचेत है। वह स्त्री और स्त्री के सम्बन्धें के आधर के रूप में केवल पुरुष सम्बन्धें की बजाए स्त्री–अनुभूति का आधर बनाती है। इसलिए कहती हैं– फ्मुक्ति केवल आर्थिक नहीं होती। जरूरत तो है कि औरतें अपने मानसिक जकड़न से निकले।

धीरे–धीरे मुझे यही समझ में आया कि अकेला होना कोई अपराध नहीं। कोई जरूरी है कि हम केवल पारम्परिक सम्बन्धें को ही अपना समझें।'[14]

छिन्नमस्ता की नायिका प्रिया बंद समाज की उस बच्ची का प्रतिरूप है, जिसका बचपन से लेकर किशोरावस्था तक आते–आते बध्याकरण कर दिया जाता है। बध्याकरण के प्रभाव को नष्ट कर सर्जनात्मक परिप्रेक्ष्य निर्मित करने की चेतना से ही प्रिया का नायकत्व बना है। प्रिया बचपन से ही घर में उपेक्षित रही। जिस 'प्युबर्टी टाइम' (Puberty time) में लड़कियों को कम बोलना, कम हँसना, कम बाहर जाना, इच्छाओं पर नियंत्राण रखना सिखाया जाता है, यहीं से स्त्री के बध्याकरण की आरम्भ होता है। प्रिया और बध्याकरण पिडोफीलिया दोनों की शिकार है।

जर्मेन ग्रीर लिखती हैं– 'स्त्री मनोविज्ञान के अधिकांश विश्लेषक मानते हैं, कि लड़कियों की बौद्धिकता और अन्य योग्यताएँ 'प्यूबर्टी टाइम' (Puberty time) के पहले और बाद में भी उल्लेखनीय रूप से उत्पीड़ित होती रहती है।'[15]

यह समय इच्छा और शरीर के बीच संतुलन बनाना सीखने का है। इसीलिए 'प्यूबर्टी टाइम' एक ऐसा समय है जब लड़की को पूरी तरह से स्त्रौण बनाने का प्रयास किया जाता है। जर्मेन ग्रीर के अनुसार 'इस समय बच्चे का मनोविज्ञान इसका अप्रत्यक्ष विरोध करती है। किशोरावस्था का चिड़चिड़ापन, ज्यादा गुस्सा आना आदि इसी के लक्षण हैं।'[16] अतः कहना चाहिए कि प्यूबर्टी (Puberty) के समय बच्चे में विरोध की क्षमता अध्कि सक्रिय होती हैं, वह विरोध करता है।

प्रिया ऐसी बच्ची हैं, जो इस विरोध की शक्ति को विकसित अभिव्यक्ति में बदल देती है। बध्याकरण को वह स्त्री का सहज हिस्सा नहीं मानती है, इसलिए इसके मानसिक दुष्प्रभावों से लड़ती रहती है। वह इस स्त्रीकरण के दुष्चक्र से निकलना चाहती है। जर्मेन ग्रीर कहती है 'हमारी इच्छा हमसे कार्य कराती है और जो कार्य हम करते हैं उसी से सभी मनुष्यों के व्यक्तित्व निर्धरित होते हैं।'[17]

पारिवारिक दबावों के बीच भी प्रिया एक उदासीन स्त्रौण और उसे सही ठहराने वाली मानसिकता नहीं पालती, वह मानसिक रूप से सचेत है।

इसीलिए समाज के स्त्री में शारीरिक रूप से अत्यन्त सुंदर होने की बाध्यता के सौंदर्य मिथ की शिकार होकर भी प्रिया कभी उससे ग्रस्त नहीं हुई। उसे बचपन से ही बोका, भंगन, गधी जैसे उपमान मिले। जिस समय प्रिया अपने आप का, अपने शारीरिक परिवर्तनों से संतुलन बनाने का मानसिक संघर्ष कर रही है, उसी समय, उसके मन में स्त्री के सौंदर्य मिथ को 'प्रोजेक्ट' करने का प्रयास किया जाता है। यह सभी समाजों का सच है। प्रिया को सबसे पहले अनचाही जन्मी लड़की के रूप में, फिर सौंदर्य से हीन अनुपयोगी लड़की के रूप में बार–बार हीनभावना दी गई। वास्तव में अबोध बच्ची से किशोरावस्था तक का समय जहां से स्त्री का अपनी क्षौनिकता, इच्छा और अस्तित्व के बारे में प्राथमिक ज्ञान बनता है। इस 'पड़ाव' पर प्रिया सौन्दर्य मिथ से टकरात हुए अपने नैसर्गिक रूप को कुण्ठा रहित भावना से स्वीकारने का आंतरिक संघर्ष करती रहती है।

मेरी वोल्सटन क्राफ्रट लिखती है– 'बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि शारीरिक सुंदरता स्त्री का गहना है। इससे हमारा दिमाग भी हमारे शरीर की तरह सोचने लगता है और सुन्दरता के चारों ओर घूमता रहता है और इसी दिशा में विकास चाहता है।'[18]

जर्मेन ग्रीर कहती हैं 'यह एक प्रकार का 'स्टीरियोटाइप' है, जो अंदर से पूरी तरह स्त्रौण है। स्त्री–पुरुष दोनों द्वारा ही स्त्री को एक सेक्स ऑब्जेक्ट के रूप में देखा जाता है.... उसका मूल्य ;स्त्रीद्ध इस बात से प्रमाणित होता है, कि वह दूसरों को कितना उत्तेजित कर सकती है...इसके अतिरिक्त उसे कुछ करने की जरूरत नहीं है।'[19]

प्रिया इस 'ब्यूटी मिथ' में फँसने के बजाए व्यक्तित्व का चुनाव करती है। वह कहती है– 'जिंदगी जीने के लिए अपनी लड़ाई लड़नी पड़ती है।'[20]

प्रिया का संघर्ष केवल मानसिक नहीं, बल्कि आर्थिक स्तर पर भी वह इसे स्वीकारती हैं। वह अपनी आर्थिक जिम्मेदारी स्वयं उठाती है। अपने प्रति शैक्षिक और आर्थिक चेतना ही उसे पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करती है। प्रिया का विवाह के बाद भी व्यवसाय का चुनाव कर पति से अलग पहचान बनाना, समाज में कामकाजी स्त्री की रूढ़ अवधरणा से भिन्न है।

प्रिया कामकाजी है, किन्तु उसका काम उसकी पारिवारिक जिम्मेदारियों के सामने गौण नहीं हैं, न ही वह कामकाजी होकर भी पति की पालतु बने रहने में विश्वास करती है।

वह जानती है परम्परागत विवाह संस्था की सफलता स्त्री–पुरुष के 'स्टीरियोटाइप' रूप पर चलती है, वह कहती है– मुझे प्रेम, सैक्स, विवाह ये सारे सदियों पुराने हुए शब्द लगने लगे थे। नहीं, शब्द नहीं, मांस के ताजा टुकड़े, लहू टपकाते हुए। इन शब्दों के पीछे की दीवानगी और आदिकाल से चली आ रही परम्पराओं का चेहरा सिर्फ इन औरत की आँसुओं से तरबतर है।'[21]

स्त्री जब काम करती है तो उसे भी स्त्री के स्टीरियोटाइप से जोड़कर देखा जाता है। जर्मेन ग्रीर स्त्री के काम के बारे में कहती हैं– 'अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बुनियादी सोच यह है कि प्यार से वह पति की सेवा और सहायता करेगी, घर की आजीविका चलाने वाले व्यक्ति के रूप में पति का आत्मविश्वास बढ़ाएगी। घर से बाहर स्त्री के काम को हीनता से देखने के पीछे यही पहलू है... यह मान लिया जाता है कि स्त्री दफतर में भी पुरुष को 'सर्व' करने के लिए बनी है।'[22]

प्रिया के अनुसार 'वास्तव में विवाह की सारी व्यवस्था इसी भाव (मालिकाना भाव) पर आधरित है, जहाँ स्त्री की चेतना विकसित होने लगती है, यह व्यवस्था चरमराने लगती है।'[23] अतः प्रिया निरंतर गतिशील रहने वाला पात्रा है, जो कहीं भी स्टीरियोटाइप नहीं है। प्रिया मात्र चरित्रा नहीं बल्कि वह स्त्री की विभिन्न जीवन अवस्थाओं का सच है। बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक स्त्री का सैक्स, अर्थ शक्ति, पहचान (भावनात्मक/विचारात्मक) तीनों ही मोर्चों पर स्त्री का कैसे बलात्कार, दोहन और उपेक्षा होती है, ये प्रिया की जीवन द्वारा प्रदत्त परिस्थितियाँ हैं, लेकिन एक स्त्री कैसे स्वतन्त्रा सोच, सर्जनात्मकता, साहस के द्वारा इनसे निकल सकती है, यह प्रिया का 'सैल्फ मेड' रूप है।

पीली आँधी की सोमा ऐसी नायिका है, जो स्त्री–यौनिकता के संकीर्ण और रूढ़ रूप को नकार देती है। वह विवाह संस्था में आने के बावजूद अपनी लैंगिक जरूरत को अनदेखा नहीं करती। सोमा सोचती है, क्या इस घर की औरत के दिल में कुछ–न–कुछ धुआँ है? लेकिन यथार्थ इतिहास में आराम से जुगाली कर सकता है मगर मेरा यौवन?मेरे सपने?मैं भविष्य चाहती हूँ, लेकिन कौन सा भविष्य?आखिर एक गृहस्थिन का भविष्य क्या हो सकता है।'[24] किन्तु सोमा की लैंगिक जरूरत के पीछे केवल शारीरिक कारण नहीं बल्कि सामाजिक–जैविक है। जिसमें वह सिर्फ लैंगिक ;शारीरिक सम्बन्ध नहीं चाहती, बल्कि सामाजिक और जैविक रूप से मातृत्व भी चाहती है, आर्थिक आत्मनिर्भरता भी चाहती है। इसीलिए जब दूसरा पुरुष उस सामाजिक और जैविक आवश्यकता की मनोवृत्ति को नहीं समझ पाता तो वह एकाकी जीवन चुनती है। अतः सोमा ऐसी नायिका है जो अपने शरीर, इच्छा और जीवन स्थिति तीनों में संतुलन चाहती है और इस सन्तुलन को पाने में बाध्क सभी खोखले बन्धनों को तोड़ देती है।

आओ पेपे घर चलें की 70 वर्षीय आइलिन ऐसी नायिका है, जो वृद्धावस्था में भी स्त्री के स्त्रौण रूप को नकारती है। वह कहती है औरत कहाँ नहीं होती और कब नहीं होती वह जितना ही रोती है उतना ही औरत होती जाती है।'[25]

निष्कर्ष :

इस प्रकार ये सभी नायिकाएँ विशिष्ट हैं, एक प्रकार से बच्ची से लेकर वृद्धा तक, विवाहिता से लेकर लिव–इन–टूगेदर अपनाने वाली स्त्री तक घर की चारदीवारी में खटने वाली से लेकर विदेशी पृष्ठभूमि पर व्यापार साध्ने वाली स्त्री तक, भिन्न–भिन्न स्त्री मॉडल है, किन्तु सभी स्त्री मुक्ति के एक विचार से बँध हैं और एक दूसरी की आगामी कड़ी है। इन नायिकाओं को एक–दूसरे के परिप्रेक्ष्य में देखने पर यही सिद्ध होता है कि ये किसी स्त्री लिखंत की नायिकाएँ कम हैं, उससे ज्यादा एक सम्पूर्ण व्यक्तित्वशाली स्त्री बनने के क्रम में जीवन–संघर्ष के विभिन्न पड़ाव अधिक है। जो मिथकों से परे जीवन के प्रति स्त्री के वास्तविक परिप्रेक्ष्य को तो प्रस्तुत करती हैं, साथ ही अपने पाठ के माध्यम से पाठक, लेखिका और स्त्री चरित्रा के बीच सह–सम्बन्ध की रचना भी करती है। यही इनकी सफलता है।

संदर्भ व टिप्पणियाँ:

1.प्लैन, गिल एण्ड सेल्लरस, सुसज ;सम्पादनद्ध, हिस्टरी ऑफ फेमिनिस्ट लिटरेरी हिस्टरी, कैम्बरिज, युनिवर्सिटी प्रैस, न्यूयॉर्क, 2007, पृ. 46.
2.वही, पृ. 58.
3.शॉल्टर, इलेन, ए लिटरेचर ऑफ देयर ऑन, प्रिंसपल, एन.जे. प्रिसटन युनिवर्सिटी प्रैस, 1977, पृ. 18.
4.खेतान, प्रभा, अग्निसंभवा, हंस पत्रिका ;सम्पादन राजेन्द्र यादव, दरियागंज, नई दिल्ली, मई 1992, पृ. 63.
5.वही, पृ. 55
6.वही, पृ. 62
7.वही, पृ. 59
8.खेतान, प्रभा, अपने–अपने चेहरे, हंस पत्रिका ;सम्पादन : राजेन्द्र यादव दरियागंज, नई दिल्ली, अप्रैल 1989, पृ. 10
9.ग्रीर, जर्मेन, फीमेल युनख, हारपर कॉलिन्स पब्लिशर्स लि. लंदन, पृ. 143.
10.वही, पृ. 144.
11.वही, पृ. 144.
12.खेतान, प्रभा, अपने–अपने चेहरे, हंस पत्रिका ;सम्पादन : राजेन्द्र यादव दरियागंज, नई दिल्ली, मई 1992, पृ. 98
13.वही, पृ. 198–199

14.वही, पृ. 195–96
15.ग्रीर, जर्मेन, फीमेल युनख, हारपर कॉलिन्स पब्लिशर्स लि. लंदन, पृ. 122.
16.वही, पृ. 122.
17.वही, पृ. 123.
18.क्राफ्रट, मेरी वॉल्सटन, ए विंडीकेशन ऑफ राइट ऑफ वुमन, तोमासेली, सिलवान ;सम्पादकद्ध, कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रैस, न्यूयॉर्क, 1995 पृ. 90.
19.ग्रीर, जर्मेन, फीमेल युनख, हारपर कॉलिन्स पब्लिशर्स लि. लंदन, पृ. 146.
20.खेतान, प्रभा, छिन्नमस्त, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1997, पृ. 22.
21.वही, पृ. 123–124.
22.ग्रीर, जर्मेन, फीमेल युनख, हारपर कॉलिन्स पब्लिशर्स लि. लंदन, पृ. 56.
23.खेतान, प्रभा, छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1997, पृ. 53.
24.खेतान, प्रभा, पीली आँधी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2001, पृ. 210.
25.खेतान, प्रभा, आओ पेपे घर चले, सरस्वती विहार प्रकाशन, दिल्ली, 1990, पृ. 79.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net